SYLLABUS

BBA. I YEAR

Subject – Hindi

UNIT – I	**मैथिलीशरण गुप्त परिचय पाठः मातृभूमि (कविता)**
	प्रेमचन्दः परिचय पाठः शतरज के खिलाड़ी (कहानी)
	व्यग्यः शरद जोशी जीप पर सवार इल्लियों **नियत कार्य - लेखक प्रेमचन्द की शैली के अनुसार वास्तविकता के आधार पर कोई कहानी लिखिए।**
UNIT – II	**पर्यायवाची शब्द] विलोम शब्द अनेक शब्द के लिए एक शब्द (हिन्दी व्याकरण)**
	संधि और उसके प्रकार (हिन्दी व्याकरण) नियत कार्य - हिन्दी अखबारकी सहायता से हिन्दी की शब्द संपदाकी खोजकर 15 नए शब्द लिखिए।
	बीज शब्द- धर्म] अद्वैत] भाषा] अवधारणा] उदारीकरण ।
UNIT – III	**वैचारिक भारतीय भाषाओं में राम**
	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल परिचय पाठ: उत्साह (भावमूलक निबन्ध)
	रामधारी सिंह दिनकर परिचय पाठ: भारत एक है (संस्कृति)
	आदिशंकराचार्य-जीवन व दर्शन **नियत कार्य - यात्रा संस्मरण का आशय बताते हुए अपने जीवन से जुडी किसी यात्रा संस्मरण का वर्णन कीजिए।**

गतिविधि -1 राजभाषा हिन्दी से जुडे विषयों पर प्रश्नोत्तरी का आयोजन।

गतिविधि -2 हिन्दी शब्दों की शुद्धअशुद्ध वर्तनी से जुडी गतिविधि।-

renaissance

शब्द भंडार किसे कहते हैं

हिंदी साहित्य या हिंदी भाषा में शब्दों का ऐसा समूह जिसमें पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी, अनेकार्थी, समरूपी भिन्नार्थक और अनेक शब्दों के लिए एक शब्द जैसे शब्दों को एक जगह इकट्ठा करके रखना ही शब्द भंडार है।

शब्द भंडार के प्रकार

1. पर्यायवाची शब्द
2. विलोम शब्द
3. एकार्थी शब्द
4. अनेकार्थी शब्द
5. समरूपी भिन्नार्थक शब्द
6. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द आदि।

1. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो लगभग एक समान अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। सरल भाषा में कहें तो समान अर्थ वाले शब्दों को ही पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

मैंने यहां कुछ शब्द दिए हैं जो की आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकते हैं -

पर्यायवाची शब्द

1. अश्व - घोड़ा, तुरंग, घोटक, हय
2. अहंकार - घमंड, अहं, गर्व, अभिमान
3. असुर - दानव, दनुज, राक्षस
4. अध्यापक - शिक्षक, आचार्य, गुरु
5. अतिथि - मेहमान, पाहून, अभ्यागत, आगंतुक
6. अमृत - सुधा, पीयूष, अमिय, अमी

7. तालाब - सरोवर, तड़ाग, सर, ताल
8. तट - कूल, किनारा, कगार
9. दशा - अवस्था, स्थिति, हालत, परिस्थिति
10. इन्द्र - सुरपति, देवराज, देवेंद्र, पुरंदर, शचीपति
11. दास - सेवक, भृत्य, नौकर, अनुचर
12. दूध - दुग्ध, क्षीर, पय, गोरस
13. उपवन - बाग़, बगीचा, उद्यान, वाटिका, फुलवारी
14. ऋषि - मुनि, साधू, संत, महात्मा
15. कमल - पंकज, अरविन्द, पदम्, नीरज, जलज
16. पत्नी - भार्या, गृहणी, वधू, दारा
17. किरण - रश्मि, अंशु, कर, मरीचि
18. पर्वत - गिरी, पहाड़, अचल, नग, शैल
19. पेड़ - वृक्ष, विटप, पादप, महीतरु
20. चाँदनी - चंद्रिका, कौमुदी, ज्योत्स्ना
21. चतुर - कुशल, दक्ष, निपुण, प्रवीण, पटु
22. अरण्य - जंगल, वन, कानन, विपिन
23. आँख - नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग
24. आकाश - आसमान, नभ, गगन, व्योम, अंबर
25. दुःख - पीड़ा, व्यथा, क्लेश, संताप
26. देव - देवता, सुर, अमर, विबुध
27. उद्देश्य - लक्ष्य, प्रयोजन, ध्येय, मकसद, इरादा
28. धनुष - धनु, चाप, कमान
29. उन्नती - विकास, उत्थान, तरक्की, प्रगति
30. परमात्मा - प्रभु, ईश्वर, भगवान, ईश
31. कामदेव - मनोज, मदन, काम, अनंग
32. कार्य - काम, कृत्य, कर्म, काज
33. पथिक - राही, पंथी, मुसाफिर, बटोही
34. कोकिल - कोयल, पिक, परभृत

35. फूल - कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प
36. चंद्र - चन्द्रमा, शशि, हिमांशु, राकेश, शशांक
37. भौंरा - भ्रमर, अलि, भँवरा, षट्पद, भृंग
38. सूर्य - सूरज, दिनकर, आदित्य, रवि, भानु

विलोम शब्द की परिभाषा - वे शब्द जो एक दुसरे का विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें विलोम शब्द कहते हैं। विलोम शब्द को विपरीतार्थी शब्द भी कहते हैं।

विलोम शब्द हिन्दी

1. अंदर - बाहर
2. अंधकार - प्रकाश
3. आगमन - प्रस्थान
4. अंतरंग - बहिरंग
5. अंतर्मुखी - बहिर्मुखी
6. अतिवृष्टि - अनावृष्टि
7. अनुकूल - प्रतिकूल
8. इहलोक - परलोक
9. कटु - मधुर
10. निरक्षर - साक्षर
11. अनुज - अग्रज
12. कोमल - कठोर
13. उत्तीर्ण - अनुत्तीर्ण
14. उत्थान - पतन
15. उष्ण - शीत
16. उदार - अनुदार
17. उपकार - अपकार
18. उपस्थित - अनुपस्थित
19. एकता - अनेकता

20. तरुण - वृध्द
21. निंदा - प्रशंसा
22. अनुराग - विराग
23. कृत्रृम - स्वाभाविक
24. मौखिक - लिखित
25. दुर्बल - सबल
26. सर्वज्ञ - अल्पज्ञ
27. आस्तिक - नास्तिक
28. दीर्घ - लघु
29. आसक्ति - विसक्ति
30. दुर्लभ - सुलभ
31. नश्वर - शाश्वत
32. कुकर्म - सुकर्म
33. अनिवार्य - ऐच्छिक
34. कृतज्ञ - कृतघ्न
35. परमार्थ - स्वार्थ
36. अपराधी - निरपराधी
37. अग्र - पश्च
38. मित्र - शत्रु
39. अभिज्ञ - अनभिज्ञ
40. विकारी - अविकारी
41. संयोग - वियोग
42. सफलता - विफलता
43. चल - अचल
44. अनाथ - सनाथ
45. कुटिल - सरल
46. पराधीन - स्वाधीन
47. अपमान - सम्मान

48. कीर्ति - अपकीर्ति

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

परिभाषा - वे शब्द जो अनेक शब्दों के स्थान पर अकेले ही प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें अनेक शब्दों के लिए एक शब्द कहते हैं।

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द उदाहरण -

1. जिस बात को कहा न जा सके - अकथनीय
2. जिसे टाला नहीं जा सकता - अनिवार्य
3. जो किसी के पीछे चलता हो - अनुयायी
4. जहां जाया न जा सके - अगम्य
5. अनेक राष्ट्रों से संबंधित - अंतर्राष्ट्रीय
6. जिसे जीता न जा सके - अजेय
7. जो क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
8. जो थोड़ा जानता हो - अल्पज्ञ
9. बिना वेतन के काम करने वाला - अवैतनिक
10. जिसे देखा न जा सके - अदृश्य, परोक्ष
11. जो कभी न मरे - अमर
12. अत्याचार करने वाला - अत्याचारी
13. जिसका विवाह हो गया हो - विवाहित
14. जो कभी बूढ़ा न हो - अजर
15. जिसे पाना सरल हो - सुलभ
16. जहां - जंगली पशु स्वतंत्रतापूर्वक रहते हों - अभ्यारण
17. आकाश को चुमने वाला - गगनचुम्बी
18. जिसकी आयु छोटी हो - अल्पायु
19. जिसे पढ़ा न हो - अपठित
20. जिसकी कल्पना न की जा सके - अकाल्पनिक
21. अंदर की बात जान्ने वाला - अन्तर्यामी

22. जो किसी के अधीन न हो - स्वतंत्र
23. जो धर्म का कार्य करे - धर्मात्मा
24. इन्द्रियों को जीतने वाला - जितेन्द्रिय
25. जहां अनाथ रहते हों - अनाथालय
26. अच्छे भाग्य वाला - सौभाग्यशाली
27. प्रत्येक मास होने वाला - मासिक
28. मांस न खाने वाला - शाकाहारी
29. दूर की सोचने वाला - दूरदर्शी
30. सौ वर्षों का समूह - शताब्दी
31. जो आँखों के सामने हो - प्रत्यक्ष
32. सुनने वाला - श्रोता
33. जो पढ़ा-लिखा न हो - अनपढ़
34. जिसकी आत्मा धर्म में लीन हो - धर्मात्मा
35. जिसके मुंह से आग निकलती हो - ज्वालामुखी
36. श्रम द्वारा जीवन यापन करने वाला - श्रमजीवी
37. जो शिव का उपासक हो - शैव
38. जो अपने पर अवलम्बित हो - स्वावलम्बी
39. उपकार को मानने वाला - कृतज्ञ
40. दूसरे देश का - विदेशी
41. जिसमें विकार न हो - निर्विकार
42. जो कार्य करने में कठिन हो - दुष्कर
43. जो पढ़ा लिखा हो - साक्षर
44. जो क्षण मात्र का हो - क्षणिक
45. जो गिना न जा सके - अगणित
46. जो अभी-अभी पैदा हुआ हो - नवजात
47. जिसके मन में ममता न हो - निर्मम
48. जो सच बोलता हो - सत्यवादी
49. जो अच्छे कुल में पैदा हो - कुलीन

50. पृथ्वी पर रहने वाला - थलचर

'krjat d f[kykMh

eu"; ,d lkekftd iz.kh gA vdys jgukj leg e jguk vkj lekt cukdj jguk& gekjh nfu;k e ;s gh rhu fLFkfr;k gA bu fLFkfr;ks e ls rhljh ;kuh lekt cukdj jgus dh fLFkfr lIQ eu"; dh g] blhfy, mls lHkh iz.kh;ks e J"Bre iz.kh gkus dk xkjo izkIr gA eu"; dk n'k vkj lekt ls vuda :iks e cgr dN feyrk g] blfy, mldk Hkh ;g dÙkO; g fd og ru] eu vkj /u lHkh rjhdks ls bl ls eDr gkus dk i;kl djA yfdu cgr ls eu"; viu bl dr0; dk ikyu djus e #fp ugh fn[kkr vkj viuk iV Hkju] viu 'kkd iwj dju vkj viuh l[k&lfoèkkvks dk vkun yu e yx jgr gA tc fdlh n'k dh 'kklu&0;oLFkk ls tM ykx ,lk djr g rk ;g chekjh turk rd Hkh igp tkrh g vkj n'k cjckn ;k ijk/hu gk tkrk gA ,l gh fo"k; ij ge lkpu dk etcj djrh g ;g dgkuh& ^'krjat d f[kykMh*A

dgkuh dk e[;r% dFkkoLrq] ik= vkj pfj=&fp=.k] lokn] Hkk"kk&'kyh vkj ifjos'k d vk/kj ij le>k tkrk gA

1 dFkkoLrq

dgkuh dh 'kh"kd ,d Hkfedk ls gkrh g vkj bl Hkfedk d ckn dgkuh d e[; ik= ehj vkj fejtk gekjs lkeu vkr gA njvly] ;g Hkfedk bl dgkuh dh ey dFkkoLrq dk le>u d fy, cgr vko';d gA ;gk dgkuhdkj ijk/hu Hkkjr d ,d iez[k lÙkk&dæn y[kuÅ d lkekftd&jktuhfrd okrkoj.k dh ppk djrk gA bl ppk e og 'kkld&oxz ls ydj vke turk rd dk foykfLrk e Mck fn[kkrk gA NkV&cM lHkh ukp&xku] iguu&vkkus dh vknr iMrh gA y[kd us ukxfjdk dh bl eu%fLFkfr dk fp=.k djr g, viu ;qx e Hkh fo|eku bl iofÙk ij fVIi.kh djr g, dgk g fd bl lkink; d ykxk ls nfu;k [kkyh ugh gA ;gh ugh og vkx dbs ckj viuh ;g fVIi.kh Hkh j[krk g& ^;g jktuhfrd iru dh pje lhek FkhA**

iepn ;g crkuk pkgr g fd ftl n'k dk ftEenkj oxz ykijokg gkdj Hkkx&foykl e Mck tkrk g] ml n'k dk xyke gku ls dkbZ ugh cpk ldrkA

इस कहानी में प्रेमचंद ने <u>वाजिदअली शाह</u> के वक्त के <u>लखनऊ</u> को चित्रित किया है। भोग-विलास में डूबा हुआ यह शहर राजनीतिक-सामाजिक चेतना से शून्य है। पूरा समाज इस भोग-लिप्सा में शामिल है। इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं - मिरज़ा सज्जाद अली और मीर रौशन अली।

renaissance
renaissance

दोनों वाजिदअली शाह के जागीरदार हैं। जीवन की बुनियादी ज़रूरतों के लिए उन्हें कोई चिन्ता नहीं है। दोनों गहरे मित्र हैं और शतरंज खेलना उनका मुख्य कारोबार है। दोनों की बेगमें हैं नौकर-चाकर हैं समय से नाश्ता-खाना, पान-तम्बाकू आदि उपलब्ध होता रहता है।

एक दिन की घटना है- मिरजा सज्जाद अली की बीवी बीमार हो जाती हैं। वह बार-बार नौकर को भेजती हैं कि मिरज़ा हकीम के यहाँ से कोई दवा लायें किंतु मिरज़ा तो शतरंज में डूबे हुए हैं। हर घड़ी उन्हें लगता है कि बस अगली बाजी उनकी है। अंत में तंग आकर मिरज़ा की बेगम उन दोनों को खरी-खोटी सुनाती हैं। खेल का सारा ताम-झाम ड्योढी के बाहर फेंक देती है। नतीजा यह निकलता है कि शतरंज की बाजी अब मिरज़ा के यहाँ से उठकर मीर के दरवाजे जा बैठती है।

मीर साहब की बीवी शुरू में तो कुछ नहीं कहतीं लेकिन जब बात हद से आगे बढ़ने लगती है तब इन दोनों खिलाड़ियों को मात देने के लिए वह एक नायाब तरकीब निकालती है। जैसा कि हमेशा होता था, दोनों मित्र शतरंज की बाजियों में खोये हुए थे कि उसी समय बादशाही फौज का एक अफ़सर मीर साहब का नाम पूछता हुआ आ खड़ा होता है। उसे देखते ही मीर साहब के होश उड़ गये। वह शाही अफ़सर मीर साहब के नौकरों पर खूब रोब ग़ालिब करता है और मीर के न होने की बात सुनकर अगले दिन आने की बात करता है। इस प्रकार यह तमाशा खत्म होता है। दोनों मित्र चिन्तित हैं, इसका क्या समाधान निकाला जाय।

मीर और मिरज़ा भी छोटे खिलाड़ी नहीं थे। उन्होंने भी गज़ब की तोड़ निकाली। दोनों मित्रों ने एक बार पुनः स्थान-परिवर्तन करके ही अपना अगला पड़ाव माना। न होंगे न मुलाकात होगी। इधर बेगम आज़ाद हुई उधर मीर बेपरवाह। नया स्थान था शहर से दूर गोमती के किनारे एक विरान मस्ज़िद। वहाँ लोगों का आना-जाना बिल्कुल नहीं था। साथ में जरूरी सामान जैसे हुक्का चिलम दरी आदि ले लिये। कुछ दिनों ऐसा ही चलता रहा। एक दिन अचानक मीर साहब ने देखा कि अंग्रेजी फौज गोमती के किनारे-किनारे चली आ रही है। उन्होंने मिरज़ा से हड़बड़ी में यह बात बताई। मिरज़ा ने कहा - तुम अपनी चाल बचाओ। अंग्रेज आ रहे हैं आने दो। मीर ने कहा साथ में तोपखाना भी है। मिरज़ा साहब ने कहा- यह चकमा किसी और को देना। इस प्रकार पुनः दोनों खेल में गुम हो गए।

कुछ समय में नवाब वाजिद अली शाह कैद कर लिए गए। उसी रास्ते अंग्रेजी सेना विजयी-भाव से लौट रही थी। पूरा शहर बेशर्मी के साथ तमाशा देख रहा था। अवध का इतना बड़ा नवाब चुपचाप सर झुकाए चला जा रहा था। मीर और रौशन दोनों इस नवाब के जागीरदार थे। नवाब की रक्षा में इन्हें अपनी जान की बाजी लगा देनी चाहिए। परंतु दुर्भाग्य कि जान की बाजी तो इन्होंने लगाई ज़रूर पर शतरंज की बाजी पर। थोड़ी ही देर बाद खेल की बाजी में ये दोनों मित्र उलझ पड़े। बात खानदान और रईसी तक आ पहुँची। गाली-गलौज होने लगी। दोनों कटार और तलवार रखते थे। दोनों ने तलवारें निकालीं और एक दूसरे को दे मारीं। दोनों का अंत हो गया। काश! यह मौत नवाब वाजिदअली के पक्ष में और ब्रिटिश सेना के प्रतिपक्ष में हुई होती! लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

2 ik= vkj pfj=&fp=.k

dgkuh d e[; ik= g& fej tk lkgc vkj ehj lkgcA bu nkuk d 0;fDrRo e vud lekurk,¡ g] D;kfd ;s ,d gh oxZ d gA iepn u bu nkuk dh leku iofÙk;k d vk/kj ij rRdkyhu okrkoj.k dk Hkh fpf=r dju dk i;kl fd;k gA okrkoj.k e tk foykfLrk Qyh Fkh] mlls ;s Hkh xzLr FkA bud vfrfjDr dgkuh d vU; ik=k g fej tk lkgc dh cxe] ckn'kkgh lokj vkj ukdjkuh gfj;k vkfnA lcls igys ge fej tk lkgc d 0;fDrRo dh fo'ks"krkvk dk le>r gA fej tk lkgc dk iijk uke fej tk lTtkn vyh FkkA o y[kum d uokc okftnvyh 'kkg d ,d tkxhjnkj FkA mUg viuh thfodk pyku dh dkbZ fpark ugh Fkh] D;kfd mud ikl iird lifÙk FkhA mUg 'krj t [kyu dk cgn 'kkd Fkk ;k dg fd cjh yr FkhA o cgn vkyLlh vkj dkepkj blku FkA mudh 'krj t [kyu dh vknr d ckj e mud vkl&ikl d ykx ukdj vkj pkdj Hkh vPNh jk; ugh j[kr rFkk mudh cjkbZ djr jgr gA fej tk lkgc 'krj t d [ky e bru Mwc tkr fd ?kj dh fpark djuk Hkh NkM nrA blfy, mudh cxe Hkh mul ij'kku jgrh Fkh vkj ge'kk fej tk lkgc dk yrkMrh jgrh FkhA o ;g crkuk pkgr g fd ftl n'k dk ftEenkj oxZ ykijokg gkdj foykl e Mwc tkrk g] ml n'k dk xyke gku ls dkbZ ugh cpk ldrkA

ehj lkgc dk iijk uke ehj jk'ku vyh gA bud ikl Hkh fej tk lkgc dh rjg iird tkxhjnkjh gA bUg Hkh viuh thfodk pyku dh dkbZ fpark ugh gA ge'kk 'krj t [kyuk rFkk iku] gDdk] fpye tl ekn inkFkk dk lou djuk budh vknr gA budh bl vknr u bud LokfHkeku dk u"V dj fn;k gA fej tk lkgc dh iRuh bul cgn uiQjr djrh g fiQj Hkh ;s fej tk lkgc o ?kj tkuk ugh NkMrA ehj lkgc dk fej tk dh cxe dk ckyuk cjk yxrk g] blfy, o fej tk lkgc dk cxe d lkeu rudj jgu dh ulhgr nr gA ehj lkgc cgr Mjikd vkj dk;j blku gA fej tk dh cxe d xLls d Mj ls o Hkkx tkr gA ,d ckj tc ckn'kkgh iQkt dk vQlj budk uke iNrk gvk vkrk g rk bud gk'k mM tkr gA Hkkxu e gh ;s viuh Hkykb

renaissance

le>rs gSA ?kj ds njokts cUn djds ukSdj dks ckyrs gS fd mUgs dg nks fd ?kj esa ugha gSA vFkkZr >B ckyuk bUgs Hkh vkrk gSA 'krjat [ksyus esa cbZekuh Hkh djrs gSA ;gh cbZekuh vkxs >Bh vdM+ fejtk dh rjg mudh Hkh eR;q dk dkj.k curh

3 laokn&;kstuk

izepUn us laoknksa dk mi;ksx vko';drkuqlkj fd;k gSA tc os ik=ksa dh pkfjf=d fo'ks"krk,¡ crkuk pkgrs gS] rks cht&chp esa laoknksa dk Hkh lgkjk ysrs gS] mnkgj.k ds fy, ,d LFkku ij tc cxqe lkfgck dgrh gS fd& ^^D;k iku eaxk,s gS\ dg nks] vkdj ys tk,A [kkus dh Qqjlr ugha gS] ys tkdj [kkuk flj ij iVd nks] [kk,¡ pkgs dqÙkk dk f[kyk,A** bl laokn ls cxqe lkfgck dh euksfLFkfr dk cks/ gksrk gS ftlesa Øks/ vkSj >YykgV gSA

,d vU; LFkku ij fejtk lkgc dgrs gS& ^^[kqnk ds fy,] rEgs gtjr gqlu dh dle gSA ejh e;r gh ns[kks] tks m/j tk,A** ;g laokn fejtk lkgc ds vieku dk Mj dks O;Dr djrk gSA

ehj lkgc cxqe lkfgck ds ifr ds lkFk lgkuqHkwfr j[krs gSA ehj lkgc dk dFku& ^^cMh xLlkoj ekye gksrh gSA exj vkiu mUg ;k flj p

fejtk&[kqnk dh dle] vki cMs cnns gSA bruk cMk gknlk ns[kdj Hkh vkidks n[k ugha gksrkA gk;] xjhc okftn vyh 'kkgA ;gk fejtk dk dguk ^gk;] xjhc okftnvyh 'kkg* ,d xgjs O;X; dks izdV djrk gSA mudh pkiywlh vkSj >Bh lgkuHkwfr bl h ,d okD; ls izdV gks tkrh gSA

bl dgkuh esa tgk¡ Hkh laoknksa dk iz;ksx gqvk gS] ogk¡ vf/d 'kCn mnZ vFkok iQkjlh 'kCn ds gSA buls dgkuh esa thoUrrk vk xbZ gS rFkk rRdkyhu y[kumQ ds lkekftd thou 'kSyh rFkk mudh Hkk"kk dk cks/ gksrk gSA bu laoknksa ls gesa ik=ksa dh euks fLFkfr ,oa muds mnns';ksa dk ljyrk ls irk pyrk gSA dgkuh esa iz;Dr ,ls laoknksa ls dgkuh dk LokHkkfod fodkl gksrk pyk x;k gSA vr% bl dgkuh dk ,d vfr egRoiw.kZ i{k gS& blds laokn&;kstuk] tks dgha ls Ñf=e ugha yxrh vkSj LokHkkfod okrkoj.k dk fuekZ.k djrh gSA laokn ik=kuqdy gSA muesa pqVhykiu gS] Hkkokuqdy yrk gS lgtrk gS] vkSj LokHkkfodrk gSA

4 ns'kdky vkSj okrkoj.k

bl dgkuh esa ftruh Hkh ?kVuk,¡ gS] os vo/ dh gSA vo/ jkT; dk okrkoj.k blesa vfHkO;Dr gqvk gSA dgkuh esa ftl le; dk o.kZu gS] og 1857 ds vkl&ikl dk gSA vki tkurs gh gS fd Hkkjrh; bfrgkl esa 1857 dk D;k egÙo gSA lu 1857 esa gekjk igyk Lok/hurk&vkanksyu gqvk FkkA ;g vkanksyu liQy u gks ik;k vkSj Hkkjr vaxstksa dk iwjh rjg ls xqyke gks x;kA bl dgkuh esa Hkkjr ds jkT;ksa esa ls ,d vo/ ds iru dh ifØ;k dk fp=.k gSA dgkuh ds vkjHk esa gh dgkuh ds ey mnns'; ds vuqlkj okrkoj.k fufeZr fd;k x;k gSA y[kd us Li"V :i ls dgkuh ds ns'kdky dk mYys[k fd;k gS& ^^okftn vyh 'kkg dk le; FkkA y[kumQ foykflrk ds jax esa Mwck gqvk FkkA** ;gk¡ ij y[kumQ ls rkRi;Z y[kumQ dh leLr turk vkSj 'kkldksa ls gSA ys[kd us fy[kk gS fd vehj vkSj xjhc lHkh fdlh&u&fdlh yr rFkk foykflrk esa Mwcs FksA thou dk dksbZ Hkh {ks=k blls NwVk u FkkA lHkh ,d&nljs ls fujis{k FksA lalkj esa D;k gks jgk gSA bls

tkuus esa fdlh dh fnypLih u FkhA iQdhjksa dk iSls feyrs] rks os Hkh jkfV;ka u ydj viQhe [kkrs ;k 'kjkc ihrsA D;k vki tkurs gSa fd ,slh fLFkfr dc gksrh gS\ th gka] tc 'kkld&oxZ ds ykx iwjh rjg ls fudEes gks tk,¡ vkSj foykl esa Mwc tk,¡A

uokc okftnvyh 'kkg ds ckjs esa eSaus jkT;ksa dh dgkuh i<+h gS] ^^'kgj esa dRy u gks jgk gksxkA ykx [kkuk [kk&[kkdj vkjke ls lks jgs gksaxsA gtwj lkgc Hkh ,s'kxkg esa gksaxsA** ;g og okrkoj.k gS ftlesa u uokc dks turk dh fpark gS] u iztk ;k dh_ u turk dks fdlh dh fpark gSA lc ,d&nwljs ls vyx] VwVs gSaA

5 Hkk"kk&'kSyh

bl esa vjch&iQkjlh ds 'kCnksa dk iz;ksx fd;k x;k gS] lkFk gh rRle vkSj rn~Hko 'kCnksa dk Hkh bLrseky gSA dgha&dgha vaxzsth ds 'kCn Hkh gSaA bl dgkuh esa fgUnh Hkk"kk dk ,d fHkUu :i gS] ftls &fgnqLrkuh* dgk tkrk gSA ^fgnqLrkuh* Hkk"kk dk og :i gS tks fgnh vkSj vjch&Qkjlh ds ykd iz;pfyr] ljy 'kCnksa ds vk/kj ij cuh gSA blds lkFk gh Hkk"kk dk ;g :i Hkkjr dh feyh&tqyh laLÑfr dks Hkh vfHkO;Dr djrk gSA

bl ls dgkuh esa ltho rk ,oa jkspdrk dk lekos'k gksrk gS rFkk dgha ls cukoVhiu ;k Ñf=erk ugha >ydrh gSA bl dgkuh dh Hkk"kk ik=kuqdwy vkSj Hkkokuqdwy gS vFkkZr ik=ksa ds 0;fDrRo vkSj mudas Hkkoksa ds vuqdwy gSA lHkh ik=kksa ds laoknksa ls muds 0;fDrRo ,oa mudh lksp ds ckjs esa irk pyrk gSA y[kumQ esa tc okftnvyh 'kkg dks dSn dj fy;k tkrk gS vkSj fejtk lkgc tc ;g ckr eghj lkgc dks crkrs gSa rks mudk ;g dFku fd igys viuk ckn'kkg dk cpkb, fQj uokc lkgc dk ekre dhft,xkA

-6 mn~ns';

ftl iwdkj eSnku esa cpko vkSj vkØe.k dk egRo gksrk gS] oSls gh 'krjat ds [ksy esa HkhA izepan bl dgkuh ds ek/;e ls ;g dguk pkgrs gSa fd fejtk vkSj ehj tSls ykx ;fn viuk fnekx ns'k ds cpko esa yxkrs rks xqykeh ls cpk tk ldrk FkkA Lok/khurk&vkanksyu ds le; dh vusd jpukvksa esa bfrgkl ls lcd ysus dh ckr dgh tk jgh FkhA izepan us bl dgkuh esa Hkh Lok/khurk&vkanksyu esa yxs usrkvksa vkSj 'krjat ds f[kykM+h muds iheNs pyus okyh turk dks ;g lh[k nh fd ns'k vkSj Lok/khurk ds fgr esa ges vkjke rFkk foykl dks NksM+ nsuk pkfg, vkSj viuh ftEesnkfj;ksa dks fuHkkuk pkfg,A ysfdu ^'krjat ds f[kykM+h* ds nkuksa f[kykM+h ns'k vkSj lekt dh mis{kk djds 'krjat esa gh 0;Lr jgrs gSaA os viuh cjh vknrksa ds i{k esa lek/ku djrs gq, dgrs gSa fd 'krjat [ksyus ls cqf¼ rh{.k gksrh gSA ysfdu mudh rh{.k cqf¼ dk dkbZ lkekftd mi;ksx dgkuh esa fn[kkbZ ugha nsrk Li"V gS fd fdlh 0;fDr dk dkbZ Hkh i{k rc rd ldkjkRed ugha cu ikrk] tc rd fd mldk lEca/ lekt ds fgr ls u gksA bl dgkuh esa 'krjat] ehj vkSj fejtk& ;s lc viuk vki esa egRoiw.kZ ugha cfYd budk ek/;e ls dgh xbZ ckr egRoiw.kZ gSA ogh izepan dk mn~ns'; Hkh gSA izepan ns'k dks xqykeh ls eqDr ns[kuk pkgrs Fks] blfy, mUgksaus xqyke cukus

okyh fLFkfr;ksa dk fp=.k djds ikBdksa dks vkxkg fd;k gSA blds lkFk&lkFk ;g Hkh crk;k gS fd ekufld iznw"k.k dk Hkh lØe.k gksrk gS] vFkkZr~ ,d oxZ dh cqjh vknrsa] nwljs oxZ rd igqaprh gSA dgkuh esa uokc] ehj] fejtk lc fuf"Ø;] foykl h vkSj lq[k&lqfo/kvksa esa Mwcs gSA os l?k"kZ djus ls cprs gSA bu ckrksa dk vlj turk ij Hkh iM+rk gSA blfy, lekt dk iR;sd O;fDr ,d&nwljs ls VwVk] O;fDrxr jkx&jax esa Mwck gSA bldk ifj.kke ;g gksrk gS fd u rks ns'k cprk g] u gh O;fDrA uokc cnh gks x, vkSj ehj vkSj fejtk O;fDrxr >Bh 'kku ds dkj.k ,d&nwljs dh gR;k dj nsrs gSA

संधि की परिभाषा व उसके प्रकार (Sandhi Ki Paribhasha V Uske Prakar) :

हिंदी में संधि की अत्यधिक महत्ता है

संधि की परिभाषा (Sandhi Ki Paribhasha) :

दो वर्णों के मेल को संधि कहते है।
संधि के उदाहरण :

1. देव + आलय = देवालय
2. जगत् + नाथ = जगन्नाथ
3. मनः + योग = मनोयोग

संधि तीन प्रकार की होती हैं:

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

स्वर संधि :

दो स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर-संधि कहते है|

उदाहरण –
सूर्य + अस्त = सूर्यास्त
महा + आत्मा = महात्मा
हिम + आलय = हिमालय
स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं :

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

1. दीर्घ-संधि :

ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ', के पश्चात क्रमशः ह्रस्व या दीर्घ 'अ', 'इ', 'उ' स्वर आएँ तो दोनों को मिलाकर दीर्घ 'आ', 'ई', 'ऊ' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + अ = आ	धर्म + अर्थ = धर्मार्थ
अ+ आ = आ	देव +आलय = देवालय
आ+ अ = आ	परीक्षा + अर्थी = परीक्षार्थी
आ+ आ = आ	महा + आत्मा = महात्मा
इ + इ = ई	अति + इव = अतीव
इ+ई =ई	गिरि + ईश = गिरीश
ई+इ = ई	मही + इंद्र= महींद्र
ई+ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश
उ +उ = ऊ	भानु + उदय = भानुदय
उ+ ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि =लाघुर्मी

ऊ+उ = ऊ वधू + उत्सव = वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि

2. गुण-संधि :

यदि 'अ' और 'आ' के बाद 'इ' या 'ई', उ या 'ऊ' और 'ऋ' स्वर आए तो दोनों के मिलने से क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं|

उदाहरण –

अ + इ = ए नर + इंद्र = नरेंद्र
अ + ई = ए नर + ईश = नरेश
आ + इ = ए रमा + इंद्र = रमेंद्र
आ + ई = ए महा + ईश = महेश
अ+ उ = ओ वीर + उचित = वीरोचित
अ+ ऊ = ओ सूर्य + ऊर्जा = सूर्योर्जा
आ + उ = ओ महा + उदय – महोदय
आ+ ऊ =ओ दया + ऊर्मि = दयोर्मि
अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

3. वृद्धि-संधि :

'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आ। तो दोनों के मेल से 'ऐ' हो जाता है तथा 'अ' और 'आ' ६ पश्चात 'ओ' या 'औ' आए तो दोनों के मेल से 'औ' हो जा है|

उदाहरण –

अ+ ए = ऐ एक + एक = एकैक
अ+ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य
आ + ए = ऐ सदा + एव = सदैव
आ + ऐ = ऐ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ+ओ=औ वन + ओषधि – वनौषधि

अ+ औ = औ	परम + औदार्य = परमौदार्य
आ+ ओ= औ	महा + ओजस्वी = महौजस्वी
आ+ औ= औ	महा + औषध = महौषध

4. यण-संधि :

यदि 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' और 'ऋ' के बाद भिन्न स्वर आए तो 'इ' और 'ई' का 'य', 'उ' और 'ऊ' का 'व' तथा 'ऋ' का 'र' हो जाता है|

उदाहरण –

इ+ अ = य	अति + अधिक = अत्यधिक
इ+ ए = ये	प्रति + एक = प्रत्येक
ई+ आ = या	देवी + आगमन = देव्यागमन
ई+ ऐ = यै	सखी + ऐश्वर्य = सख्यैश्वर्य
उ+ अ = व	सु + अच्छ = स्वच्छ
उ+ आ=वा	सु + आगत= स्वागत
ऊ+ आ = वा	वधू + आगमन = वध्वागमन
ऋ+ अ = र	पितृ + अनुमति = पित्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

5. अयादि-संधि :

यदि 'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ' स्वरों का मेल दूसरे स्वरों से हो तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'आय', 'ओ' का 'अव' तथा 'औ' का 'आव' के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

उदाहरण –

ए+ अ = अय	ने + अन = नयन
ऐ+ अ = आय	नै + अक = नायक
ऐ + इ = आयि	नै + इका = नायिका
ओ+ अ = अव	पो + अन = पवन
ओ+ इ = अवि	पो + इत्र = पवित्र

ओ+ई = अवी गो + ईश = गवीश
औ+ अ = आव पौ + अन = पावन
औ+इ = आवि नौ + इक = नाविक
औ + उ = आवु भौ + उक = भावुक

व्यंजन-संधि :

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन-संधि कहते हैं|
उदाहरण –
वाक् + ईश = वागीश (क् + ई = गी)
सत् + जन = सज्जन (त् + ज = ज्ज)
उत् + हार = उद्धार (त् + ह = द्ध)

व्यंजन-संधि के नियम :

वर्ग के पहले वर्ण का तीसरे वर्ण में परिवर्तन

किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च ट त् प्) का मेल किसी स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे वर्ण (ग ज ड द ब) या चौथे वर्ण (घ झ ढ ध भ) अथवा अंतःस्थ व्यंजन (य र ल व) के किसी वर्ण से होने पर वर्ग का पहला वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण (ग् ज् ड् द् ब) में परिवर्तित हो जाता है|
उदाहरण –
क् का ग् होना : दिक् + गज = दिग्गज
च का ज होना : अच् + अंत = अजंत
ट का ड होना : षट् + आनन = षडानन
त् का द होना: भगवत्+ भजन = भगवद्भजन
प् का ब होना : अप् + ज = अब्ज

वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क् च् ट् त् प्) का मेल किसी अनुनासिक वर्ण (वस्तुतः केवल न म) से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण (ङ् ञ् ण न म्) हो जाता है|

उदाहरण –

क् का ङ् होना : वाक् + मय = वाङ्मय

ट् का ण् होना : षट् + मुख = षण्मुख

त् का न होना : उत् + मत्त = उन्मत्त

'छ' संबंधी नियम

किसी भी ह्रस्व स्वर या 'आ' का मेल 'छ' से होने पर 'छ' से पहले 'च' जोड़ दिया जाता है|

उदाहरण –

स्व + छंद = स्वच्छंद

परि + छेद = परिच्छेद

अनु + छेद = अनुच्छेद

वि + छेद = विच्छेद

त् संबंधी नियम

(i) 'त्' के बाद यदि 'च', 'छ' हो तो 'त्' का 'च्' हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + चारण = उच्चारण

उत् + चरित = उच्चरित

जगत् + छाया = जगच्छाया

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

(ii) 'त्' के बाद यदि 'ज', 'झ' हो ता त् 'ज' में बदल जाता है।

उदाहरण –

सत् + जन – सज्जन

विपत् + जाल = विपज्जाल

उत् +ज्ज्वल = उज्ज्वल

उत् + झटिका = उज्झटिका

(iii) 'त्' के बाद यदि 'ट', 'ड' हो तो 'त्', क्रमशः 'ट्' 'ड में बदल जाता है|

उदाहरण –

बृहत् + टीका = बृहट्टीका

उत् + डयन = उड्डयन

(iv) 'त्' के बाद यदि 'ल' हो तो 'त्', 'ल' में बदल जाता है|

उदाहरण –

उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

(v) 'त्' के बाद यदि 'श्' हो तो 'त्' का 'च' और 'श्' का "छ्' हो जाता है|

उदाहरण –

उत् + श्वास = उच्छ्वास

सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(vi) 'त्' के बाद यदि 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है|

उदाहरण –

तत् + हित = तद्धित

उत् + हत – उद्धत

5. 'न' संबंधी नियम:

यदि 'ऋ', 'र', 'ष' के बाद 'न' व्यंजन आता है तो 'न' का 'ण' हो जाता है|

उदाहरण –

परि + नाम = परिणाम

प्र + मान = प्रमाण

राम + अयन = रामायण

भूष + अन = भूषण

6. 'म' संबंधी नियम :

(i) 'म्' का मेल 'क' से 'म' तक के किसी भी व्यंजन वर्ग से होने पर 'म्' उसी वर्ग के पंचमाक्षर (अनुस्वार) में बदल जाता है|

उदाहरण –

सम् + कलन = संकलन

सम् + गति = संगति

परम् + तु = परंतु

सम् + चय = संचय

सम् + पूर्ण = संपूर्ण

(ii) 'म्' का मेल यदि 'य', 'र', 'ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह' से हो तो 'म्' सदैव अनुस्वार ही होता है|

उदाहरण –

सम् + योग = संयोग

सम् + रक्षक = संरक्षक

(iii) 'म्' के बाद 'म' आने पर कोई परिवर्तन नहीं होता है|

उदाहरण –

सम् + मान = सम्मान

सम् + मति = सम्मति

7. स संबंधी नियम :

'स' से पहले 'अ', 'आ' से भिन्न स्वर हो तो 'स' का 'ष' हो जाता है|

उदाहरण –

वि + सम = विषम

वि + साद = विषाद

सु + समा = सुषमा

विसर्ग-संधि :

विसर्ग के पश्चात स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार उत्पन्न होता है, उसे हम विसर्ग संधि कहते हैं|

उदाहरण –

निः + आहार = निराहार

दुः + आशा = दुराशा

तपः + भूमि = तपोभूमि

मनः + योग = मनोयोग

अंतः + गत = अंतर्गत

अंतः + ध्यान = अंतर्ध्यान

मातृभूमि -मैथिलीशरण गुप्त

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुन्दर है।
सूर्य-चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृन्द, शेषफन सिंहासन है॥

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥

जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुये हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुये हैं॥
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाये।

जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये॥

हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?

पा कर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है॥

फिर अन्त समय तू ही इसे अचल देख अपनायेगी।
हे मातृभूमि! यह अन्त में तुझमें ही मिल जायेगी॥

निर्मल तेरा नीर अमृत के से उत्तम है।
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है॥
षट्ऋतुओं का विविध दृश्ययुत अद्भुत क्रम है।
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है॥

शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चन्द्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि! दिन में तरणि, करता तम का नाश है॥

सुरभित, सुन्दर, सुखद, सुमन तुझ पर खिलते हैं।
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते है॥
औषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली।
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली॥

जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि! वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं॥

renaissance
renaissance

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है।
सुधामयी, वात्सल्यमयी, तू प्रेममयी है॥
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुःखहर्त्री है।
भय निवारिणी, शान्तिकारिणी, सुखकर्त्री है॥

हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि! सन्तान हम, तू जननी, तू प्राण है॥

जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे॥
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे॥

उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जायेंगे।
होकर भव-बन्धन- मुक्त हम, आत्म रूप बन जायेंगे॥

मैथिलीशरण गुप्त

राष्ट्रकवि **मैथिलीशरण गुप्त** (३ अगस्त १८८६ – १२ दिसम्बर १९६४) हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। हिन्दी साहित्य के इतिहास में वे खड़ी बोली के प्रथम महत्त्वपूर्ण कवि हैं।[1] उन्हें साहित्य जगत में 'दद्दा' नाम से सम्बोधित किया जाता था। उनकी कृति भारत-भारती (1912) भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय में काफी प्रभावशाली सिद्ध हुई थी और और इसी कारण महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की पदवी भी दी थी उनकी जयन्ती ३ अगस्त को हर वर्ष 'कवि दिवस' के रूप में मनाया जाता है। सन १९५४ में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया।[4]

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा से गुप्त जी ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाया और अपनी कविता के द्वारा खड़ी बोली को एक काव्य-भाषा के रूप में निर्मित करने में अथक प्रयास किया। इस तरह ब्रजभाषा जैसी समृद्ध काव्य-भाषा को छोड़कर समय और संदर्भों के अनुकूल होने के कारण नये कवियों ने इसे ही अपनी काव्य-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिन्दी कविता के इतिहास में यह गुप्त जी का सबसे बड़ा योगदान है। घासीराम

व्यास जी उनके मित्र थे। पवित्रता, नैतिकता और परंपरागत मानवीय सम्बन्धों की रक्षा गुप्त जी के काव्य के प्रथम गुण हैं, जो 'पंचवटी' से लेकर 'जयद्रथ वध', 'यशोधरा' और 'साकेत' तक में प्रतिष्ठित एवं प्रतिफलित हुए हैं। 'साकेत' उनकी रचना का सर्वोच्च शिखर है।

काव्यगत विशेषताएँ

- (१) राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता
- (२) गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता
- (३) पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता
- (४) नारी मात्र को विशेष महत्व
- (५) प्रबन्ध और मुक्तक दोनों में लेखन
- (६) शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग
- (७) पतिवियुक्ता नारी का वर्णन

राष्ट्रीयता तथा गांधीवाद

मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट-कूट कर भर गए थे। इसी कारण उनकी सभी रचनाएं राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत है। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अन्धविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति की नवीनतम रूप की कामना करते थे।

गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। इसमें भारत के गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता का ओजपूर्ण प्रतिपादन है। आपने अपने काव्य में पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता प्रदान की है और नारी मात्र को विशेष महत्व प्रदान किया है। गुप्त जी ने प्रबंध काव्य तथा मुक्तक काव्य दोनों की रचना की। शब्द शक्तियों तथा अलंकारों के सक्षम प्रयोग के साथ मुहावरों का भी प्रयोग किया है।

गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता

एक समुन्नत, सुगठित और सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार और उदात्त चरित्र वाले नर-नारी के निर्माण की दिशा में उन्होंने प्राचीन आख्यानों को अपने काव्य का वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया अभिप्राय दिया है। जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एवं रत्नावली आदि रचनाएं इसके उदाहरण हैं।

दार्शनिकता

दर्शन की जिज्ञासा आध्यात्मिक चिन्तन से अभिन्न होकर भी भिन्न है । मननशील आर्यसुधियों की यह एक विशिष्ट चिन्तन प्रक्रिया है और उनके तर्कपूर्ण सिद्धान्त ही दर्शन है। इस प्रकार आध्यात्मिकता यदि सामान्य चिन्तन है तो षडदर्शन ब्रह्म जीव, जगत आदि का विशिष्ट चिन्तन । अतः दार्शनिक चिन्तन भी तीन मुख्य दिशाएँ हैं - ब्रह्म - जीव - जगत

रहस्यात्मकता एवं आध्यात्मिकता

गुप्त जी के परिवार में वैष्णव भक्ति भाव प्रबल था। प्रतिदिन पूजा-पाठ, भजन, गीता पढ़ना आदि सब होता था। यही कारण है कि गुप्त जी के जीवन में भी यह आध्यात्मिक संस्कार बीज के रूप में पड़े हुए थे जो धीरे-धीरे अंकुरित होकर रामभक्ति के रूप में वटवृक्ष हो गया।

नारी मात्र की महत्ता का प्रतिपादन

नारियों की दुरवस्था तथा दुःखियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उसके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। नारियों की दशा को व्यक्त करती उनकी ये पंक्तियां पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी। आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

भाषा शैली

मैथिलीशरण गुप्त की काव्य **भाषा** खड़ी बोली है। इस पर उनका पूर्ण अधिकार है। भावों को अभिव्यक्त करने के लिए गुप्त जी के पास अत्यन्त व्यापक शब्दावली है।

'मातृभूमि' कविता का सारांश प्रस्तुत कीजिए। अथवा मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'मातृभूमि' पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने मातृभूमि में अपनी मातृभूमि की महत्ता एवं उसके प्रति अपने प्रगाढ़ प्रेम का ऋणस्वीकारी-भाव चित्रण किया है। 'शेवफन-सिंहासन' पर बैठे हुए अपनी मातृभूमि कवि को 'सर्वेश की सगुण मूर्ति लगती है, वह इस पर बलि बलि जाता है— बलिहारी जाता है जो पृथ्वी पर पैदा होते ही नवजात को सहारा देती हैं, ममतापूर्वक अपनी गोद में लेकर उसकी रक्षा करती है और जो अपनी जननी की भी पालनहार है, उस मातृभूमि पृथ्वी से यह पूज्यभाव से 'मातामही' के रूप में अपना अटूट रिश्ता जोड़ता है।

renaiss